

१७

गोग्रास

११३६



३
१६८५

अ.भा. कृषि गोसेवा संघ - जोधपुर - वर्य.

अनुक्रमणिका

१ साक्षर हों या सार्थक	विनोबा	५२९
२ तप-त्याग का आरंभ—एकासना	मुनि ज्ञानचंद्र	५३३
३ अनुशासन आचार्यों का	संपादक	५३५
४ मानव से प्रकृति की रक्षा	—	५३६
५ खिलार-थरपारकर गाय	बनवारीलाल चौधरी	५३८
६ चारा व इंधन वृक्ष—अगस्ती	—	५४०
७ अपने हाथों अपना विनाश	इंदु टिकेकर	५४३
८ साइलेज : पशुओं के लिए अचार	ना. तु. पोहणकर	५४७
९ राजस्थान में अंत्योदय योजना	—	५४९
१० बिना गोबर, मैला गैसप्लांट	ही. ना. तोडणकर	५५३
11 A case for total ban on Slaughter of Cow and its Progeny	“Go-Darshan”	556
12 Maharashtra Animal Preservation Act, 1976	—	559

मुद्रक : रणजित् देसाई, परंछाम मुद्रणालय, पवनार (वर्धा) महाराष्ट्र
 प्रकाशक : नारायण जाजू, मंत्री (कार्यालय), कृषि-गोसेवा संघ, गोपुरी, वर्धा
 पत्र-व्यवहार प्रकाशक के पते पर किया जाय ।

संपादक : राधाकृष्ण बजाज

गोव्रास

वर्ष २ : अंक ५
११ मार्च ७८

गोपुरी, वर्धा

वार्षिक शुल्क ६ रु.
प्रति अंक ५० पैसे

साक्षर हों या सार्थक

— विनोबा —

जिसको हम शासन कहते हैं, यानी सत्ता वह पांच सालों में बदलती है। लेकिन शिक्षक को तीस साल काम करने का मौका मिलता है। उनके हाथ के नीचे कई शिष्य तैयार हो जाते हैं। तीस साल बाद ये चले जायेंगे तो उनकी जगह उनके शिष्य आयेंगे। उनकी परंपरा चलेगी। इस वास्ते जो शक्ति आचार्यों में है, वह सत्ताधारी शासन में हो ही नहीं सकती। इसलिए आप लोगों को संगठित रूप से काम करना होगा।

आप जानते हैं, बाबा ने कर्ममुक्ति जाहिर की है। बाबा कर्ममुक्त हो गया, आप कर्मयुक्त हो गये। आप कर्मयुक्त, बाबा कर्ममुक्त और कुछ लोग होंगे कर्मभुक्त।

आप बहुत सारे उत्तर भारत के दीख रहे हैं। कुछ दक्षिण के भी हैं। दक्षिण के लोग ज्यादा होना चाहिए। आप बहुत सारे हिंदू दीखते हैं। मुसलमान, ख्रिश्चन भी आपके साथ होने चाहिए तब आपका मजबूत संगठन बनेगा।

मैंने एक सूत्र दिया है, सत्य, प्रेम, करुणा। उसमें बाबा का सब विचार आ जाता है। जहां तक हिंदुस्तान का तान

है, सत्य यानी राम, प्रेम यानी कृष्ण और करुणा यानी बुद्ध । दुनिया के लिए देखें तो सत्य यानी वैदिक धर्म । प्रेम यानी क्रिश्चानिटी । 'गाँड इज लव' कहते हैं वे लोग । करुणा यानी इस्लाम । रहमानुर्रहीम का अर्थ है करुणा । ये मुख्य तीन धर्म हैं दुनिया में । इसलिए आपके समुदाय में कुछ मुसलमान, कुछ ख्रिस्ती होने चाहिए ।

आपके मन में पॉलिटिक्स नहीं होना चाहिए । यह पार्टी, वह पार्टी, अनेक पार्टियां हैं । ऐसा जो पॉलिटिक्स है वह आपके चित्त में होना ही नहीं चाहिए । गांधीजी के जाने के बाद मुसलमानों को बसाने का काम बाबा ने शुरू किया था । दिल्ली के नजदीक के नूह गांव में, मस्जिद में मुसलमानों की सभा थी । पूछा, अकबर लब्ज सुना है ? बोले, हां सुना है, 'अल्ला हो अकबर' । पर अकबर बादशाह का नाम मालूम नहीं था उनको । कबीर के बारे में पूछा तो बोले हां, जानते हैं । तो दिल्लीवाले मुसलमान अकबर को जानते नहीं थे, लेकिन कबीर को जानते थे । इस वास्ते आप लोगों को अपना आत्मविश्वास बढ़ाना होगा । और उसके लिए पॉलिटिक्स पूरी तरह से बाहर निकालना होगा ।

आचार्यों को एक-एक जिला 'अंडॉप्ट' (स्वीकार) करना चाहिए । वर्धा जिले के शिक्षकों ने वर्धा जिले में ताकत लगानी चाहिए । बिहारवालों को पूर्णिया जिला, पंजाबवालों को गुरुदासपुर, म. प्र. में गुना जिला, सरगुजा जिला और उ. प्र. में बलिया बताया है । अपने-अपने प्रांत में एक-एक जिला ऑर-गनाइझ (संगठित) करें । उसमें शिक्षक अपनी सारी शक्ति लगा कर गांधीजी का दिया हुआ पांच-पंद्रह जो रचनात्मक कार्यक्रम है वह पूर्ण करें । गांव-गांव संगठित वनें । गांवसभा बना कर

गांव में कोई भूखा न रहे इसकी जिम्मेवारी गांव-सभा उठाये । पॉलिटिक्स की बात नहीं । केवल रचनात्मक कार्य करना है । इस प्रकार एक-एक जिला आदर्श बनायेंगे तो उसका असर प्रांत पर पड़ेगा और प्रांत के बाद भारत पर असर पड़ेगा ।

वाक्य है शास्त्र में, कलिः शयानो भवति । मनुष्य जब सो जाता है तब कलियुग होता है । संजिहानस्तु द्वापरः, उठ कर बैठ गया तो द्वापर युग में आ गया । उत्तिष्ठन् त्रेता भवति, उठ खड़ा हो गया तो त्रेता युग में आ गया और कृतं संपद्यते चरन्, चलने लगा तो कृतयुग में आ गया । इस वास्ते चरंवेति चरंवेति — चलो रे चलो । आप लोग आचार्य हैं यानी घूमनेवाले । आचार, संचार, विचार, प्रचार, यह सब आचार्यों का काम है । आप जानते हैं, महावीर निरंतर घूमते थे । शंकराचार्य, कबीर घूमते थे । इस तरह संत-सत्पुरुष निरंतर घूमते थे । इस वास्ते इधर का संदेश उधर पहुंच जाता था । इसलिए आचार्यों को एक-एक जिला 'अंडांप्ट' करके उसमें निरंतर घूमते रहना चाहिए । और वह कृषि-गोरक्ष-वाणिज्यम् इत्यादि जितना कार्य है वह सारा जिले में फैलाना, उसके लिए संगठन बनाना; यह सारा आचार्यों का काम है । पॉलिटिक्स उसमें बिल्कुल न हो ।

आचार्य के लिए मैंने निर्भय, निर्वैर, निष्पक्ष, ये तीन गुण बता कर आचार्य की व्याख्या की थी । श्रीमन्जी ने कहा था, निर्भय आचार्य प्राप्त करना मुश्किल है, निर्वैर, निष्पक्ष मिल सकते हैं । लेकिन निर्भय आचार्य मिलना आजकल के जमाने में मुश्किल है, क्योंकि तनखाह सारी सरकार के हाथ में रहती है !

मुख्य चीज करने की यह है कि शिक्षण का नौकरी के साथ संबंध नहीं होना चाहिए । लोग शिक्षित बनते हैं तो नौकरी

चाहते हैं। कृषि-विज्ञान का अध्ययन उत्तम किया हुआ मनुष्य खेती करने नहीं जाता, नौकरी करने जाता है। इसलिए शिक्षा का नौकरी के साथ जो संबंध है, वह तोड़ना चाहिए।

देवनागरी लिपि सारे भारत को जोड़ने के लिए एक अंडिशनल (अतिरिक्त) लिपि मानी जाये। उस-उस प्रांत की लिपि होगी, वह तो रहेगी। प्लस, (अलावा) नागरी लिपि भी होगी। भिन्न-भिन्न भाषाओं के कारण भारत के टुकड़े पड़े हैं। देवनागरी लिपि उनको जोड़ेगी। इसलिए आचार्यों को देवनागरी लिपि का प्रचार करना चाहिए।

मैंने एक लेख लिखा था, 'साक्षर यां सार्थक'। आज लोग निरक्षर न रहें, साक्षर हों, पढ़ना-लिखना जानें, इसकी कोशिश होती है। इस दुनिया में दो निरक्षर हो गये। मुहम्मद पैगंबर निरक्षर थे तो क्या हुआ? गंधर्व ने आकर एक कागज पेश किया और कहा, 'इक्रअ' यानी पढ़ो। मुहम्मदसाहब ने कहा, 'हे अल्लाह् ! मैं पढ़ना जानता नहीं।' तो अल्लाह् को उनके सामने आकर बातचीत करनी पड़ी। मुहम्मदसाहब कहते थे, 'अगर मैं पढ़ना जानता तो मुझे परचे पर ही समाधान करना पड़ता।' आपके (आचार्यों के) हाथ में भी परचे ही आते हैं। दूसरा था कबीर ! कबीर ने कहा : कोरा कागज काली स्याही। लिखत पढ़त वाको पढ़वा दे। तू तो राम सुमर जग लडवा दे। कबीर पूछते हैं, कोरा सुंदर कागज लेकर उसे क्यों खराब करते हो? इसलिए लोग साक्षर बनें, पढ़ना-लिखना सीखें, यह महत्त्व की बात नहीं। काम करना सीखें, सहानुभूति रखें, गरीबों के लिए काम करें यह महत्त्व की बात है।

आचार्यों को जो कुछ काम करना है, उसमें गोसेवा एक

तप-त्याग का आरंभ - एकसाथ

- मुनि ज्ञानचंद्र -

गाय और गोवंश की कतल अमानुषिक एवं ईश्वर को कतई नापसंद ऐसा निंदनीय कृत्य है। अंग्रेजों के समय से चली आयी इस जुल्मी कतल को केंद्र सरकार तुरंत बंद करे। गाय और गोवंश को कतल से बचाने के लिए देश के हर एक नागरिक को एकसाथ शांतिपूर्वक प्रयास करना चाहिए। ऐसा नहीं करेंगे तो हम निकम्मे गिने जायेंगे।

इस कतल के प्रतिकार स्वरूप तारीख १२ फरवरी १९७८ (वापू श्राद्धदिन) वसंत पंचमी से साणंद को केंद्र में रखकर जगह-जगह प्रार्थना और तप-त्याग का आरंभ किया जाना तय

महत्त्व का काम है। गौतम बुद्ध यानी उत्तम बैल। ऋषभदेव यानी बैल। ऋषभदेव जैनों के तीर्थंकर हैं। कृष्ण तो गाय हैं ही। कृष्ण को यशोदा ने काम दिया था, गायों को रखने का। कृष्ण का अर्थ ही है खेती करनेवाला, कृष् यानी कर्षण करना, आकर्षण करनेवाला। इस वास्ते गायों की सेवा करना, जिसका दूध हम पीते हैं, वे गायें कतलखाने में भेजी जाती हैं उसको रोकना यह काम भी आचार्यों को करना चाहिए। गायों की सेवा करने से गोबर-गॅस प्लांट भी बना सकते हैं। बीच में तैलास्त्र को प्रेषित किया अरबों ने। परिणाम इंग्लैंड पर भी हुआ, जपान पर भी हुआ। तेल ही नहीं मिला तो काम कैसे होगा? गोबर-गॅस प्लांट तेल की कमी की पूर्ति करेगा। आपकी रसोई गोबर-गॅस पर बनेगी। यह सारा काम आचार्यों को करना चाहिए।

[तारीख ११.२.७८, अ.भा. आचार्यकुल के सदस्यों के साथ]

हुआ था। इस तप-त्याग में महिने में किसी एक दिन अपनी सुविधानुसार व्यक्ति या समूह प्रार्थना करें और एक समय का भोजन-त्याग करें।

इस निश्चय के अनुसार गत फरवरी ११ और १२ तारीख को प्रार्थना एवं एक समय का भोजन-त्याग अनेकों ने किया। खास साणंद से सूचना मिली है कि १२२८ वहनों ने एवं ८२० भाइयों ने मिलकर के कुल २०४८ लोगों ने प्रार्थना और एकासना किया। आसपास के गांवों से खबर आयी है कि ८३२ वहनों और ६५२ भाइयों ने एकासना किया। कुल मिलाकर ३५०० से अधिक लोगों ने प्रार्थना एवं एक समय के भोजन-त्याग में हिस्सा लिया। यह एकासना हर महिने चालू रहेगा एवं उसकी संख्या दिन प्रतिदिन बढ़ती रहेगी ऐसा विश्वास है। लेकिन हर एक की तिथियां अलग-अलग रहेगी। वैसे कृषि-गोसेवा संघ की सूचनानुसार हर माह की ११ तारीख को करना ठीक रहता, शहरों में यह हो सकता है। लेकिन गांववालों को तारीख ध्यान में नहीं रहती, उन्हें तिथि के अनुसार ही तय करना होगा।

यहां साणंद में जिस मोहल्ले में जिस दिन एकासना रखा जाता है उस दिन हम लोग पहुंच जाते हैं। और रात्री को प्रार्थना, भजन-कीर्तन का कार्यक्रम रखते हैं। इससे सर्वत्र भक्ति का वातावरण फैलता जाता है।

इस पवित्र कार्यवाही में सभी भाग लेवें ऐसा नम्र निवेदन है। बड़े पैमाने पर यह तप-त्याग की प्रक्रिया बढ़ती जायेगी तो उसकी पवित्रता अवश्य ही केंद्र सरकार पर असर करेगी, और उसका परिणाम बहुत ही शुभ आवेगा ऐसी हमारी श्रद्धा है।

संतसेवक समुद्यम परिषद

२०-२-१९७८

साणंद, जि. अहमदाबाद

अनुशासन आचार्यों का

हाल ही में केन्द्रीय आचार्यकुल की बैठक पूज्य विनोबाजी के सान्निध्य में पवनार आश्रम में हुई थी, उसमें डा. श्रीमन्नारायणजी के स्वर्गवास के कारण रिक्त हुए अध्यक्ष-पद पर श्री शीतलप्रसादजी भूतपूर्व उपकुलपति सर्वसम्मति से अध्यक्ष चुने गये। श्री के. एस. आचारलूजी और वहन मदालसा नारायण, दो उपाध्यक्ष चुने गये एवं मंत्री पद पर श्री गुरुशरणजी यथावत चालू रहेंगे। ६८ सिधी कालोनी, ग्वालियर में आचार्यकुल का प्रधान कार्यालय रहेगा। गोसेवा परिवार नये पदाधिकारियों का स्वागत करता है और उम्मीद करता है कि आचार्यकुल अपना काम पूरे वेग से करेगा एवं पू० विनोबाजी के सुझावानुसार गोसेवा में भी सहयोग देगा।

आचार्यकुल की मिटिंग में काफी विचारविनिमय हुआ कि उसका प्रमुख कार्य क्या रहे? नई तालीम समिति और आचार्यकुल के कार्यों की क्या मर्यादा रहेगी? चर्चा में स्पष्ट हुआ कि नई तालीम समिति का काम चालू शिक्षा में परिवर्तन लाकर देश में सर्वत्र बुनियादी शिक्षा की स्थापना करना होगा। आचार्यकुल का काम देश में जलती हुई समस्याओं पर अपनी राय देना तथा उनका हल सुझाना रहेगा।

हमारा सुझाव है कि देश की सभी समस्याओं पर राय देने के बदले केवल एक समस्या को लेकर शक्ति केंद्रित की जायेगी तो कोई ठोस परिणाम निकल सकेगा। इमर्जन्सी के जमाने में मौन खुलने पर पूज्य विनोबाजी ने कहा था कि "अनुशासन आचार्यों का ही होता है, सरकार का शासन होता है। आज तक किसी भी सरकार के शासन से दुनिया का कोई भला नहीं हुआ, न आगे होनेवाला है। निर्भय, निर्वैर और निष्पक्ष आचार्यों के अनुशासन से ही देश का भला हो सकता है।" हम समझते हैं

मानव से प्रकृति की रक्षा

प्राकृतिक वातावरण को सुरक्षित रखनेवालों को कट्टरवादी और सनकी कहा जाने लगा है। इन निष्ठावान लोगों ने प्रकृति को नष्ट होने से बचाने के लिए जहांतहां अपनी ओर से कुछ प्रयत्न किये हैं। मनुष्य की लूट से प्रकृति को बचाने के प्रयत्नों को फेडरेल जर्मनी में लाखों का समर्थन मिलने लगा है। नागरिक, राजनैतिक दल और स्वयंसेवी संस्थाएं अनगिनत प्राकृतिक साधनों को बचाने के नागरिकों के उपायों का निरंतर समर्थन कर रहे हैं।

इन प्रयत्नों को ताजा वातावरण-दूषण के कारण और भी बल मिला है। पूर्व आफ्रिका में प्रकृति की रक्षा के लिए सभी संपर्क-साधनों से प्रचार किया जा रहा है, जो अनुकरणीय है। वृक्षों को गिराने के विरुद्ध गृहिणियों का आंदोलन भी उभर रहा कि देश में सर्वत्र अनुशासन कैसे स्थापित हो सकता है, इस एकमात्र समस्या का चिंतन करके सुझाव देने का कार्य आचार्यकुल ले सके तो देश को बहुत लाभ हो सकेगा। अनुशासन सरकार में कैसे आवे, जनता में कैसे आवे, विद्यार्थियों में कैसे आवे, मजदूरों में कैसे आवे, शिक्षकों में कैसे आवे, सभी धर्म-संप्रदायों में अनुशासन कैसे रहे आदि बहुत बड़ा विस्तृत क्षेत्र इस कार्य के लिए है।

शासन के लिए राज्यसत्ता का आधार चाहिए और अनुशासन के लिए प्रभुसत्ता का आधार चाहिए। देश में सर्वत्र अनुशासन लाना हो तो उसके आधारभूत तत्त्व "धर्मो रक्षति रक्षितः" धर्म-रक्षा, संस्कृति-रक्षा और गौरक्षा का सक्रिय कार्यक्रम उठाया जा सकता है। आचार्यकुल संगठन केवल शिक्षकों तक सीमित न रहकर व्यापक बने। निर्भय, निर्वैर एवं निष्पक्ष लोग अधिक से अधिक हों। आचार्य संमेलन द्वारा आरंभ किये गये कार्य को आगे बढ़ाया जाय।

— संपादक

है। सभी लोग अविकसित क्षेत्रों में उद्योग लगाने का विरोध कर रहे हैं।

विधान सभाएं अपने कानूनों में इस बात का ध्यान रखने लगी हैं कि इमारतों, कारखानों, और सड़कों आदि का वातावरण पर जो असर पड़ता है, उसकी ओर इस प्रकार के आयोजनों में अनदेखी नहीं की जानी चाहिए।

सभी बड़े योजना-कार्यों और कारखानों आदि के निर्माण में प्रकृति की रक्षा का महत्व बढ़ गया है। जहां कहीं भी विकास का, प्रकृति की रक्षा से टकराव होता है, वादविवाद खड़ा हो जाता है। इन दो पक्षों के बीच समझौते का कोई रास्ता निकल ही जाना चाहिए। प्रायः सरकार से दूसरे पक्ष की बात का ध्यान रखने को कहा जाता है। और कभी-कभी अदालतों से हस्तक्षेप करने को कहा जाता है। जहां कहीं भी प्रकृति को हानि पहुंचने का डर हो, मानव की इस प्रकार की गतिविधियों से कम से कम नुकसान पहुंचने के प्रयत्न किये जाने चाहिए। घनी आबादी-वाली फेडरल जर्मनी में वर्तमान प्राकृतिक वातावरण को भावी पीढ़ी के लिए सुरक्षित रखा जाना चाहिये।

प्रकृति को सुरक्षित रखने की व्यापक नीति के कुछ सिद्धांत ११५० वन्य सुरक्षित क्षेत्र के मामलों में पहले ही देखने को मिलते हैं। इस क्षेत्र में किसी वाहन के ले जाने की अनुमति नहीं है और पशु-पक्षियों को नष्ट करनेवाले जानवरों से इस क्षेत्र की रक्षा की जाती है। सरकारी और गैरसरकारी प्रकृति क्षेत्रों के वार्डन तथा अन्य ऐसी संस्थाओं के लोग यहां गश्त लगाते रहते हैं, जिससे कि कोई नियमों का उल्लंघन न कर सके।

बवेरिमाई वन संख्या १ राष्ट्रीय उद्यान बन गया है। उत्तरी फ्रीसीयन द्वीपसमूह में वाडेनेसी के दूसरा राष्ट्रीय उद्यान बनने की संभावना है। यहां ३ करोड़ से ४ करोड़ तक पक्षी बसते हैं।
(‘जर्मन समाचार’ से, ९-२-१९७८)

अपग्रेडिंग बनाम क्रॉसब्रीडिंग

खिलार ~ थरपारकर गाय

- बनवारीलाल चौधरी -

गाय भारतीय खेती की रीढ़ है। अतः गोसंवर्धन, गोवंश की उन्नति में भारतीय कृषि की, ग्राम-जनता की एवं राष्ट्र की उन्नति निहित है। दुर्भाग्य से भारत सरकार की गोसंवर्धन की स्थिर नीति नहीं रही। वर्तमान प्रयत्न मात्र शहरों की जनता को सस्ता दूध मिले इसके लिए 'श्वेत क्रान्ति' के बड़े नाम से किये जा रहे हैं। विदेशी नस्लों की दुग्धक्षमता आकर्षक है, इससे हम ऐसे भ्रमित हो जाते हैं कि भारतीय शुद्ध नस्लों की दूधक्षमता को भूल डी जाते हैं। दूध-प्रतियोगिताओं में भारतीय गायों ने ५० पाँड से अधिक दूध दिया है। आजकल न मालूम क्यों, इन्हें ओझल करके ही विचार किया जा रहा है। शासकीय विभागों द्वारा विदेशी संकर नस्ल के प्रजनन पर जोर दिया जा रहा है। फिर भी हर्ष की बात है कि अभी भी कई जगह इस अन्धकार में भी आलोक की झलक मिलती है। सर दोरावजी टाटा ट्रस्ट द्वारा सातारा जिले में किये जानेवाला प्रयोग इसका नमूना है। श्री द्वारकाप्रसाद परसाई पिछले १९ वर्षों से इस कार्य में लगे हैं।

सातारा (महाराष्ट्र) क्षेत्र में स्थानीय गाय, "खिलार" नस्ल है, जो खेती का काम और छकड़े में जोतने के लिए यह एक उत्तम जाति है। इसके बैलों का अपना एक आकर्षक सौंदर्य है। वे अपने मालिकों के समान ही तेज-तर्रार होते हैं। स्थानीय घासपान पर पलने के वे आदी हो गये हैं। एक कमी है—दूध कम देना। यह कमी मिटायी जा सकती है। गोप्रजनन केन्द्र धोकमोड ने यह कार्य सफलतापूर्वक किसानों की गायों में किया है। इसकी पद्धति है :-

(१) स्थानीय अच्छी गायें चुनना, चुनाव में बैल-उत्पादन और दूध-उत्पादन, दोनों लक्षणोंवाली गायें ली जाय। दोनों लक्षणोंवाली एवं अधिक दूध देनेवाली देशी नस्ल से संवरण करना, इसे अपग्रेडिंग कहते हैं और विदेशी नस्ल से संवरण को क्रॉसब्रीडिंग कहा जाता है।

(२) खिलार का थारी से अपग्रैडिंग

धोकमोड में खिलार का अपग्रैडिंग थरपारकर नस्ल के साथ किया गया। इस संयोग से खिलार-थारों संकर नसल यनी। यह नसल सर्वांगी है अर्थात् गायें दूधार हैं एवं बछड़े खेती के काम में मजबूत हैं। दूध की पूरे व्याप्त की दैनिक औसत ४ से ५ लीटर है, जब कि एक दिन का अधिकतम दूध-उत्पादन १४ से १६ लीटर तक गया है।

इधर के एक किसान श्री शंकरराव ने बंगलोर से होलस्टीन फ्रीजियन नस्ल की गाय रु. ६०००) में खरीदी थी। उसीने खिलारी-थारी बछड़ी ५००) में खरीदी थी, जिसका मूल्य गाय बनने तक रु. २०००) पड गया। इन दोनों गायों का तुलनात्मक प्रदर्शन ग्रामविकास के संचालक श्री सुरेश सूरतवाला ने नीचेनुसार दिया है।

होलस्टीन-फ्रीजियन रु. ६०००) खिलार-थारी रु. २०००)

(१) दूध : तीन बार में

१०।। लीटर - ९ लीटर

(२) व्यवस्था : गोशाला में

वांघकर रखना - चारागाह में चरने छोड़ना

(३) चारा : अच्छा चारा चाहिये - स्थानीय घास-पात से काम चलता है।

(४) धूप : गरमी सहने में मुकुमार - धूप-गरमी आसानी से सह लेती है।

(५) बछड़े : बछड़े को कोई पूछता

नहीं - बछड़े खेती के लिये पूर्ण लायक।

(६) घृतांश : २.५ से ४.० प्रतिशत - ४.५ से ६.५ प्रतिशत।

(७) बीमारी : कस्तूरबाग्राम का अनुभव है कि देशी नस्ल की तुलना में विदेशी नस्लें अधिक बीमार होती है। अतः विदेशी गायों का औषधि-खर्च अधिक होता है। देशी गायों की मृत्यु-प्रतिशत भी कम है।

(८) खुराक : मक्का, सोयाबीन, चुन्नी आदि दाना जो मानव के खाद्य में आ सकता है वह विदेशी गायों को अधिक व देशी को कम देना पडता है।

(९) लाभहानि : देशी गाय के दूध का मूल्य घृतांश अधिक होने के कारण कुछ अधिक मिलेगा, खर्च कुछ कम आवेगा, पूंजी भी देशी गाय में

चारा व इंधन वृक्ष - अगस्ती

यह एक द्वीदल (Leguminous) चारे का प्रोटीनयुक्त पौधा है; जिसका प्रत्येक अंग उपयोगी सिद्ध हुआ है। इसकी पत्तियाँ, फल तथा फूलों का उपयोग मनुष्य तथा पशु दोनों करते हैं। इसका उपयोग दक्षिणी भारत में गायों के चारे के रूप में किया जाता है तथा इसकी लकड़ियों को जलाने के काम में लाया जाता है। रात में दिखाई न देनेवाले रोगी को दवा के रूप में यह खिलाया जाता है।

स्थानीय नाम—स्थानीय भाषाओं के अनुसार इस वृक्ष के संस्कृत में अगस्ती, हिन्दी में रसना, मराठी में हडोआ, तमिल में अगस्थी, तेलगू में अगिस और मलयालम में अकस्थी, अंग्रेजी में सेसवेनिया नाम से पुकारा जाता है।

प्रारम्भ में इस पौधे को सुन्दरता के लिये उगाया जाता था। परन्तु कम लगेगी, कुल मिलाकर अपग्रेडिंग की हुई देशी गाय सदा लाभदायी होगी।

धोकमोड प्रयोग का सारांश

गत शताब्दी में देश में घी, दूध की नदियाँ भारतीय गोनस्ल के आधार पर ही बहती थी, अर्थात् भारत की गोनस्लों में यह क्षमता है। साथ ही खेती के कार्य का भार भी वे वहन करने योग्य हैं। इनकी अवहेलना और अन्य कुछ कारणों से गोनस्ल का न्हास हुआ है। विज्ञान के ज्ञान और अनुभव के आधार पर इन नस्लों में वांछनीय गुण सम्मिलित किये जा सकते हैं। यह करना ही भारत के लिये गोसंवर्धन की उत्तम नीति है।

विदेशी नस्लों के गुणों का भारतीय नस्लों में हितकर सम्मिलन की संभावनाओं को आंशिक न करें, परन्तु यह संकरण कार्य नियंत्रित हो। प्रयोग के रूप में शासकीय प्रबन्ध या संस्था विज्ञेय के आधीन हो, इसका वर्तमान गड्डम-गड्डा रूप वर्जित हो।

विदेशी नस्ल के संवरण कार्य को गोसंवर्धन में रामबाण न माने। देशी नस्लों के उत्तम गुणों के सम्मिलन की उत्तम संभावनाओं को अनदेखा न किया जाय। (स. प्रे. स.)



बाद में इसकी पत्तियों, फलियों तथा फूलों को शाक-सब्जी के रूप में खाया जाने लगा। पशुओं के लिये भी यह पोष्टिक चारे के रूप में सिद्ध हुआ।

हमारे देश के कई राज्यों, जैसे महाराष्ट्र, केरल, तामिलनाडु तथा उत्तर प्रदेश में इस वृक्ष को पीपर व पान की फसलों को तथा महाराष्ट्र में नारियल की पीध को छाया देने के लिये उगाया जाता है। केला उगाये जानेवाले क्षेत्रों में हवा की तेज गति को रोकने के लिये इस वृक्ष का विशेष महत्व पाया जाता है।

इस वृक्ष को आयु तो अवश्य कम है, परन्तु इसकी वृद्धि काफी तेज होती है। उत्तरी मैदानी भागों में अधिक ठण्ड पड़ने पर यह पौधा प्रायः नष्ट हो जाता है।

दवा के रूप में उपयोग— इसके फलों को वायुगोला (वायुशूल), ज्वरबाद अथवा पीलिया (पांडुरोग) तथा नासूर व गिल्टी (फोडा) के बढ जाने पर उपचार स्वरूप दिया जाता है। इसकी पत्तियों तथा फूलों का अर्क नाक के रोगों तथा सिरदर्द के लिये लाभदायक सिद्ध हुआ है। इसकी छाल से अर्क निकाल कर टानिक के रूप में उपयोग किया जाता है। छोटी चेचक के उपचार में इसका जुशांदा बहुत ही लाभदायक सिद्ध हुआ है। विटामिन 'ए' तथा 'सी' काफी मात्रा में होने के कारण रतौंधीपीडित व्यक्तियों के उपचार में विशेष रूप से प्रयुक्त किया जाता है। प्रोटीन तथा खनिज पदार्थों की अधिकता होने के कारण विभिन्न क्षेत्रों में यह पौधा उन लोगों के लिये वरदान स्वरूप है जिनमें इन तत्वों की कमी होती है।

पौधों को कैसे उगाये— इस पौधे का बीज ठीक ढंग से रखा जाये तो खेतों में उसे पांच वर्ष तक बोया जा सकता है। परीक्षण के आधार पर यह ज्ञात हुआ है कि १००० बीजों का वजन ५५ ग्राम होता है। इसका बीज अन्य दलहनी बीजों की अपेक्षा मुलायम होता है। इसके बीज ९८-१०० प्रतिशत तक आसानी से उगते हैं।

इनके बीजों को खेतों में बोने से नमी का अधिक प्रभाव नहीं पड़ता है। परीक्षण द्वारा यह देखा गया है कि बीज जितना ही पुराना होगा, नमी का प्रभाव उतना ही कम होगा। साधारणतः बुवाई के ४-५ दिन बाद पौधा निकल आता है।

इसके बीजों को सीधे खेत में बोना ज्यादा हितकर सिद्ध हुआ है। यदि किसी कारणवश खेत में सीधे बीज नहीं बोये जा सके हों तो वर्षा ऋतु में पालीथीन के थैलों में उगा लेते हैं। तत्पश्चात् इन पौधों को इच्छित स्थानों में लगा देते हैं। एक जगह पर लगे हुए पौधों को उखाड़ कर दूसरी जगह पर लगाने से पौधे ठीक तरह से नहीं बढ़ पाते हैं। इस-लिये ठीक बढवार के लिये या तो खेतों में सीधे बीज बोया जाय या फिर पालीथीन के थैले में उगा कर खेतों में लगाया जाय।

चारे की फराल के रूप में इसका महत्व— चारे के रूप में जब इसके बीजों को एक मीटर की दूरी पर बुआई करते हैं तो तीन माह में ही १ से १½ मीटर ऊँचे पौधे हो जाते हैं। इससे कुल ८०० क्विंटल प्रति हेक्टर हरा चारा प्राप्त हो जाता है, जो रिजका की अपेक्षा काफी अधिक होता है। प्रोटीन एवं खनिज पदार्थ भी रिजका की अपेक्षा इसमें अधिक पाया जाता है। इस प्रकार इसका पौधा अन्य फसलों के साथ बोने से भूमि तो उपजाऊ होती ही है, साथ ही सूखे समय में हरे चारे को भी प्राप्ति होती है।

बेकार परती भूमि की उपजाऊ शक्ति बढ़ाने में पौधे का योगदान— इस पौधे की जड़ों में अधिक गांठें होने के कारण भूमि में नाइट्रोजन की मात्रा बढ़ जाती है। हरी खाद के लिये इसकी पत्तियों को मिट्टी के साथ जोत दिया जाता है, जिससे पौधों को बढोत्तरी के लिये अति शीघ्र पोषक तत्व मिल जाते हैं। इण्डोनेशिया में चावल की अच्छी फसल प्राप्त करने के लिये इसके पौधों की पत्तियों को हरी खाद के रूप में प्रयोग किया जाता है।

खाद्य पदार्थों में इस पौधे का महत्व— इस पौधे का प्रत्येक अंग जैसे पत्तियाँ, लतायें, डंठल तथा फूल पशुओं तथा मुर्गियों द्वारा बड़े चाव से खाया जाता है। इसके बीज स्वादहीन तथा नशीले होते हैं। इसकी पत्तियाँ तथा फूलों को मनुष्य सलाद तथा सब्जी के रूप में उपयोग करता है। दूध देनेवाले पशुओं को खिलाने से उनके दूध में बढोत्तरी हो जाती है।

[प्रसार तथा अर्थशास्त्र विभाग : भारतीय चरागाह और चारा अनुसंधान संस्था, झांसी की ओर से]

वनो को और चारागाहों को तोड़ना अपने हाथों अपना बिनाश

— इंदु टिकेकर —

आज मानवी-विश्व के सामने भूमि-समस्या किस ढंग से खड़ी है, इसकी चर्चा कर "लूझिंग ग्राउंड" (पैरतले खिसकती भूमि) के लेखक एरिक पो. एकहोम ने एक महत्वपूर्ण लेकिन उपेक्षित विषय की तरफ दुनिया का ध्यान खींचा है। पर्यावरण विषय (इकोलाजी) की चर्चा आजकल व्यापक रूप से होने लगी है ; लेकिन इसमें भी सबसे अधिक महत्व का विषय वायु और पानी के प्रदूषण का रहा है। अब तक विशेष रूप से जिसकी तरफ ध्यान नहीं दिया गया, ऐसे इस पर्यावरण-संकट का स्वरूप "लूझिंग ग्राउंड" के लेखक ने अपनी किताब में विशद किया है।

लेखक ने सावधान किया है कि मानव का पोषण करनेवाली भूमि की प्राकृतिक पर्यावरण-व्यवस्था असह्य बोझ ढोते-ढोते कभी टूट भी सकती है। उचित समय में इस व्यवस्था का संतुलन संभालना होगा। खास कर के भारत जैसे बड़ी आबादी के दरिद्र, विकसनशील राष्ट्रों को इस संकट की गंभीरता को जल्द से जल्द समझ लेना होगा। -

क्योंकि जमीन का बोझ बढ़ने का सबसे बड़ा कारण है जनसंख्या की वेशुमार बाढ़। बीस लाख वर्षों से अधिक समय हो गया, मनुष्य-जाति धरती पर पल रही हैं। तब से १८३० तक मनुष्य-संख्या दस अरब (एक बिलियन) हो गयी। उसके बाद एक ही शती में वह दुगुनी से अधिक हो गयी। और अब, हर बीस साल में, उसमें दस अरब की वृद्धि हो रही है। १९७५ में कुल विश्व की जनसंख्या चालीस अरब (चार बिलियन) हो चुकी है। इनकी बढ़ती भूख मिटाने का कोई जादुई वैज्ञानिक तरीका उपलब्ध नहीं हो सकता। राजनैतिक सत्ता का व्यापक वितरण (विकेंद्रीकरण) और आर्थिक असमानता का निराकरण तो लेखक ने सुझाया ही है, लेकिन सबसे महत्वपूर्ण सुझाव तो यह है कि जमीन की उपजाऊ शक्ति, ज्ञानपूर्वक, वैज्ञानिक ढंग से कैसे बढ़ायी जाये या कम से कम उस शक्ति को कायम कैसे रखा जाये। असहाय, अज्ञानी, अदूरदर्शी और लोभी मानव ने अपनी जीविका के आधार का ही नाश करना शुरू किया है। और खास

कर यह संकट वहीं तीव्रता से मंडराता रहा है, जहां दरिद्र लोग रहते हैं और ये दरिद्र लोग ही अन्न-संकट के पहले बलि होते आये हैं।

पिछले पचीस सालों में दुनिया के बाजार में अनाज बेचनेवाले देशों की संख्या घटती चली गयी है और खरीदनेवाले देशों की संख्या बढ़ रही है, इस बात की तरफ भी लेखक ने ध्यान खींचा है, और इसे आनेवाले संकट का पूर्वचिह्न कहा है। १९७५ के आसपास, उत्तर अमरीका और आस्ट्रेलिया, केवल ये दो ही देश अपनी आवश्यकता से ज्यादा अनाज पैदा कर, उसे बाजार में ला सके। अन्न-परावलंबन का यह संकट पेट्रोल-परावलंबन से ज्यादा खतरनाक सिद्ध हो सकता है।

इतने सारे देशों की अनाज-उत्पादन की क्षमता कैसे कम होती गयी, उसके कारण क्या है, उन्हें दूर कैसे किया जा सकता है, इन बातों की चर्चा पूरी किताब में मिलती है। इसका कारण है वनों का विनाश (डिफारेस्टेशन)। दुनिया के वनों का विनाश का इतिहास आधुनिक सभ्यता के इतिहास के साथ जुड़ा हुआ है। माऊंट लेबनान के देवदार वृक्षों की लूट हजारों सालों से होती आयी है, और आज वह सहारा जैसा रेतीला पहाड़ बन कर खड़ा है। वनों के विनाश की गति पिछले पचीस सालों में बहुत बढ़ गयी है। उद्योग-प्रधान तथा संपन्न देश अपने वनों की संभाल विवेकपूर्वक करते हैं। लेकिन गरीब विकसनशील देशों में, किसान, लकड़हारे, चरनेवाले जानवर, लोभी व्यापारी, सब मिलकर जंगल पर शस्त्र चलाते हैं। इन्हीं कारणों से, भारत में हिमालय के जंगलों की शोचनीय हालत बनी है। नेपाल के वनों की दुरवस्था के वर्णन में लेखक ने एक पूरा प्रकरण ही लिखा है।

वनों की दुरवस्था का मतलब है, मनुष्यों का निर्वासित होना। नेपाल के निर्वासित पहाड़ी लोग, अब तराई के जंगलों को उध्वस्त कर रहे हैं। लेखक ने भारत के लिए भी इसी भविष्य का वयान किया है, क्योंकि किसान, लकड़ी के व्यापारी तथा जलावन प्राप्त करने के लिए वृक्षों को काटनेवाले लोगों ने, सबने मिलकर हिमालय को नंगा कर दिया है। परिणाम है, हर साल आनेवाली भयानक बाढ़ें। उत्तर भारत के, बंगला के तथा पाकिस्तान के करोड़ों लोग बाढ़ों की चपेट में इसलिए आते हैं कि पर्यावरण-संतुलन के लिए हिमालय के जिन वनों का अपार

मूल्य है, उन्हींका आज तेज गति से नाश हो रहा है। ऊंची चोटियों के और नदियों के मूल स्रोतों के पास के जंगलों को नित्य संरक्षित रखने की आज खास आवश्यकता है। बिहार की कोसी नदी के उल्पात का कारण है नेपाल के नंगे पहाड़। नंगे पहाड़ों की चोटियों की मिट्टी धुल कर जब काफी मात्रा में बह जाती है, तब जंगल फिर से तो खड़े हो ही नहीं सकते, पर सादी खेती भी वहां हो नहीं सकती। फिर बहनेवाली मिट्टी के साथ आदिमियों को भी नीचे बहते जाना पड़ता है।

गरीब देशों की तो और समस्या है। वहां खाना पकाने के लिए और आग सेंकने के लिए जिस जलावन की आवश्यकता होती है, उसके लिए भी जंगल काटे जाते हैं। इसके लिए आवश्यकता है जलावन की कोई पर्याय पेश करने की। सूर्य-ऊर्जा (सोलर एनर्जी) तथा गोबर-गैस का उपयोग इस काम के लिए हो सकता है। जब तक ये चीजें सर्वसाधारण के लिए उपलब्ध नहीं होंगी तब तक जंगल बचेंगे नहीं। एक विस्तृत प्रकरण में लेखक ने इस ऊर्जा-समस्या का विस्तृत विवेचन किया है।

वनों के विनाश के परिणामस्वरूप मिट्टी बह जाने से खेती को जो नुकसान पहुंचता है, उसके साथ ही वर्षा के परिमाण पर भी उसका असर होता है। इसीके साथ जुड़ी हुई है सिंचाई-व्यवस्था की दुरवस्था। पहाड़ों से बहती आनेवाली मिट्टी नदियों के पात्रों को भर देती है और बांधों से बने बड़े-बड़े सिंचाई तालाबों (डैमों) को नाकामयाब बना देती है। पानी का बहाव रुक जाने से, जमीन नमकीन बनने की प्रक्रिया शुरू हो जाती है और अनाज उपजाने की उसकी क्षमता बहुत घटती जाती है। दुनिया में हर साल हजारों एकड़ जमीन इस तरह अन्नोत्पादन के लिए अक्षम बन रही है। लेखक ने यह बात स्पष्ट रूप से कही है कि सिंचाई-योजनाओं का विकास करते समय मिट्टी भर जाने की और जमीन के नमकीन बनने की संभावना को ध्यान में रखना होगा। हाल ही में, पाकिस्तान को इसी सिलसिले में बड़ा महंगा पाठ पढ़ना पड़ा है।

लेखक का कहना है कि वनों का विनाश और चारागाहों की जमीन का सघन कृषि के लिए उपयोग करने से पश्चिम तथा मध्य भारत अधिक शुष्क बनता जा रहा है। यह प्रदेश चांद्र प्रदेश (मूनस्केप) जैसा दीखने लगा है। लेखक का सुझाव है कि इस प्रदेश का पर्यावरण न्हास टालना

हो तो परिवारों को मर्यादित करना और पशु-संख्या पर नियंत्रण करना आवश्यक है ।

अब तक एक बड़ा भ्रम बना रहा है कि उष्ण कटिबंधीय जंगल के प्रदेशों में अनाज उाजाने की अमर्याद क्षमता है । एक स्वतंत्र प्रकरण में लेखक ने इस भ्रम को दूर करने की भी कोशिश की है । घने जंगलों के बीच थोड़ो-थोड़ी जमीन अनाज-उत्पादन के लिए तैयार करना और खेती के ये टुकड़े बदलते रहना, यह हमारी परंपरागत पद्धति है । अफ्रीका, एशिया और लेटिन अमरीका जैसे घने जंगलों के प्रदेशों में यही पद्धति चल सकती है । लेकिन जहाँ जंगलों को बड़े पैमाने पर काट कर जमीन खेती के लायक बनायी गयी वहाँ यह तरीका खुदकशी का सावित हुआ है । लेखक ने स्पष्ट रूप से बता दिया है कि जंगलों का बेतहाशा कटना कहीं भी लाभदायी नहीं रहा ।

यह टालना हो तो क्या उपाय करने होंगे ? मुख्य उपाय है फिर से वनों को लगाना । इन्धन के लिये नये जल्द बढ़नेवाले वृक्ष लगाने होंगे । नदियों के स्रोत के पास भी जंगल खड़े करने पड़ेंगे । हिमालय को फिर से हराभरा बनाना होगा । कठिनाई है लोगों के दारिद्र्य की, सरकार की योजनाओं की, और उन्हें जमीन पर उतारने की सरकारी अक्षमता को । अब विकसनशील देशों को नयी आर्थिक नीति स्वीकारनी होगी । आर्थिक और सामाजिक विषमता को नष्ट करने के लिए अगर कदम न उठाये जाये, तो पर्यावरण को पुनर्जीवित करना कठिन है । फिर से वनों को लगाना इस कार्य के साथ जोड़कर दोनों को नये उद्योग देने होंगे । इस विषय में आधुनिक चीन ने आश्चर्यजनक कार्य कर दिखाया है । फिर से वनों को लगाने का व्यापक और सफल प्रयोग करके चीन ने सब देशों को आदर्श पाठ पढाया है ।

सवाल है कि मानव सभ्यता के सामने भूख की जो समस्या है उसका हल लोकतंत्र में है या नहीं ? बहुसंख्य देशों की चोटी अधिक अनाज पैदा करनेवाले और अमीर देशों के हाथों में रहेगी तो मानवी स्वतंत्रता की समस्या भी बनी ही रहेगी । और फिर, यह भी कैसे कह सकते हैं कि भूख के बलि बननेवाले गरीब लोग अपनी नियति को शांतिपूर्वक स्वीकार करेंगे ? •

साइलेज : पशुओं के लिये अचार

— ना. तु. पोहणकर —

यह देखा गया है कि भारतवर्ष में गरमी के दिनों में अधिकतर भागों में हरे चारे का अभाव हो जाता है, जब कि दुधार पशुओं के लिये इन दिनों हरे चारे की नितांत आवश्यकता होती है। हरे चारे के अभाव में दुधार गायों की दुध-उत्पादनक्षमता कम हो जाती है। इस समस्या का एकमात्र समाधान यही है कि ऐसे समय के लिये हरे चारे का साइलेज (अचार) बनाकर रखा जाय।

साइलेज के लिए गड्ढा

साइलेज का गड्ढा ऐसे स्थान पर बनाना चाहिए कि जहां वर्षा का पानी न जमा होता हो। गड्ढा गोलाकार होना चाहिए। चौरस गड्ढा होने से उसके कोने में चारा ठीक से दबा न सकने के कारण हवा रह जायेगी और साइलेज सड़ जाने का डर रहेगा। इसलिए गोलाकार कुआं, नमूना गड्ढा ही सर्व दृष्टि से उपयुक्त पाया गया है। गड्ढे की गहराई भी इतनी ही हो कि नीचे के हिस्से में पानी न आ सके। गड्ढे का आकार चारे की मात्रा पर निर्भर करेगा। साधारणतया एक घनफुट में १ से २ क्वींटल चारा दबाया जा सकता है। चारा जितना बारीक काटा होगा उतना ही चारा ज्यादा दबाया जा सकता है यानी दो क्वींटल प्रति घनफुट से ज्यादा नहीं। १० फुट डायमिटर और १० फुट गहरे कुएं में ५० टन तक चारा दबाया जा सकता है। गड्ढा पक्का होने से चारे की पोष्टिकता की हानि कम होगी। अगर पक्का गड्ढा बनाना संभव न हो तो कच्चे गड्ढे को चिकनी मिट्टी से लेप कर देना चाहिए।

फसल काटने का समय

चारे की पोष्टिकता कायम रखने के लिए फसलों को निम्नलिखित समय पर काटना चाहिए।

(१) प्राकृतिक घासों (मारवेल, सामा, सेवरा) फूल आने के समय (अगस्त, सितंबर में)

(२) जई दुग्धावस्था में (दिसंबर, जनवरी में)

(३) बरसीम, रिजका, नेपीयर - कटाई ऐसे समय करें, जिससे पुनर्वृद्धि पर असर न पड़े।

(४) मक्का, ज्वार, बाजरा - भुट्टे का दूध जब गाढ़ा होने लगे।

साइलेज बनाने के लिए उपयुक्त फसलें

खेत के मेढ पर होनेवाले मारवेल, सामा, सेवरा आदि एवं जिन चारों में मिठास अधिक होती है जैसे मक्का, ज्वार, बाजरा, जई आदि साइलेज बनाने के लिए उपयुक्त हैं। यहां एक बात ध्यान में रखनी होगी कि जिन चारों में पानी की मात्रा ज्यादा होगी, जैसे बरसीम, रिजका, काऊपीज में पानी का अंश अधिक होने से अकेले देने से गल जायेंगे और पौष्टिक तत्वों को हानि पहुंचेगी। इन चारों को मक्का, ज्वार, बाजरा आदि के साथ देने से साइलेज की पौष्टिकता बढ़ेगी इसलिए इनके पौष्टिक तत्त्व बचाने के लिए मिलीजुली फसलें देना लाभप्रद रहता है।

साइलेज बनाने की विधि

खेत से चारा काटने के तुरंत बाद छोटे-छोटे टुकड़े (आधा इंच) काटकर गड्ढे में भरना आरंभ कर दिया जाता है। आठ-दस इंच की तह होने के बाद नमक का १ प्रतिशत घोल का छिड़काव करते रहना चाहिये। यह छिड़काव मामूली होना चाहिये। इसके बदले जहां उपलब्ध हो, मोल्यासेस (गुड की राव) का छिड़काव करना अति उत्तम होता है। गड्ढा भरने का कार्य दो दिन के अंदर पूरा कर देना चाहिये। पहले दिन गड्ढा अपूर्ण रहेगा। उसको पुआल से ठीक से ढँक कर उस पर वजन रख देना चाहिये, ताकि उसमें हवा का प्रवेश न हो सके। गड्ढे के तीन फुट ऊपर तक चारा भर देना चाहिये। बाद में उस पर सूखी घास या धान की पुआल से ढँक कर ऊपर से दो फुट मिट्टी की तह देकर ऊपर से लेप कर देना चाहिये। इसमें एक बात का विशेष ध्यान रखना होता है कि चारा जितनी अच्छी तरह दबाया जायगा उतना ही साइलेज अच्छा बनेगा।

राजस्थान में अंत्योदय योजना

अंत्योदय का अर्थ है सबसे अंतिम व्यक्ति का उत्थान । इस योजना का उद्देश्य है राजस्थान के प्रत्येक गांव के ५ सर्वाधिक गरीब परिवारों का आर्थिक दृष्टि से विकास करना । राजस्थान में ३३ हजार गांव हैं । प्रति गांव ५ परिवार के हिसाब से १ लाख ६५ हजार परिवारों का उत्थान प्रथम वर्ष में अभिप्रेत है । प्रथम वर्ष के अनुभव के आधार पर हर वर्ष प्रति गांव पांच-पांच परिवार विकास हेतु लिये जावेंगे ।

अंत्योदय योजना विकास के उस क्रम को बदलने का प्रयास है जिससे अमीर लोग लाभान्वित हुए हैं एवं अमीर तथा गरीब के बीच की खाई बढी है । इस योजना के द्वारा महात्मा गांधी एवं लोकनायक जयप्रकाश नारायण के आदर्शों के अनुरूप दरिद्रनारायण के फैलाव पर पहली बार सरकार द्वारा विशेष रूप से ध्यान केन्द्रित किया गया है ।

अगर जल्दबाजी में ठीक से दबाया नहीं गया तो अंदर हवा रह जायेगी और साइलेज सड़ जायेगा । दो तरह के जीवाणु होते हैं । एक अेरोबिक और दूसरे अनैरोबिक । अेरोबिक हवा में जीनेवाले सड़ाने की क्रिया करते हैं । अनैरोबिक बिना हवा के जीनेवाले जीवाणु चारे की स्थिति जैसी की वैसी ही कायम रखते हैं । साइलेज के लिये अनैरोबिक बिना हवा के जीनेवाले जीवाणु की आवश्यकता होती है, इसलिये साइलेज के गड्ढे की हवा पूर्णतया निकाल देनी चाहिये । चारा जितनी मुस्तंदा के साथ दबाया जायगा उतनी ही हवा उसमें रहने न पायेगी । यही साइलेज बनाने की कुंजी है । साइलेज तीन माह में पक्व हो जाता है ।

साइलेज खोलने की विधि

साइलेज एक किनारे से खोलना चाहिये पूरा गड्ढा खुला कर देने से साइलेज में किड़े पड़ जाते हैं और साइलेज बरबाद हो जाता है । इसलिये प्रतिदिन साइलेज निकालने के बाद उसको अच्छी तरह ढँक देना चाहिये । एक दुधारा गाय के लिये ३-४ किलो साइलेज काफी है । साइलेज खिलाने से गरमी में भी दूध देने की क्षमता कायम रहेगी ।



इन परिवारों का चयन ग्रामसभाओं में ग्रामनिवासियों ने स्वयं किया है। इन ग्रामसभाओं ने गरीब परिवारों का केवल चयन ही नहीं किया, बल्कि उनके आर्थिक विकास के उपाय भी सुझाये हैं। ग्रामसभाओं तथा गरीब परिवारों से मिली सूचना के आधार पर प्रत्येक परिवार की सामाजिक व आर्थिक स्थिति का लेखा-जोखा तैयार किया गया है। इससे इन परिवारों को मदद देने संबंधी प्रस्ताव तैयार करने में सहायता मिलेगी।

प्रायोगिक पृष्ठताछ के परिणामों से पता चला कि अधिकतर परिवार भूमिहीन हैं और उनकी प्रतिव्यक्ति प्रतिमाह आय रु. २० से भी कम है। कुछ परिवारों की मासिक आय प्रतिव्यक्ति रु. ३० तक है, जो राजस्थान में औसत गरीबी की रेखा रु. ५५ मासिक से भी कम है। इन परिवारों में लगभग ६० प्रतिशत परिवार दस्तकार हैं, जिनमें १० प्रतिशत मुस्लिम परिवार हैं। शेष ४० प्रतिशत परिवार अनुसूचित एवं जनजाति के हैं।

सहायता के तरीके

उपलब्ध भूमि केवल अंत्योदय परिवारों को ही दी जायेगी। रेगिस्तानी इलाकों में जहां भूमि-आवंटन पर पाबंदी है, वहां भी अपवाद रूप में उपलब्ध भूमि अंत्योदय परिवारों को दी जावेगी। भूमि उपलब्ध हो इसलिए सीलिंग कानून का अमल भी कड़ाई से किया जायेगा। इन वर्ष ४० हजार परिवारों को भूमि का आवंटन कर सकेंगे ऐसी आशा है। भूमि आवंटन के साथ-साथ इन परिवारों को खेती-उपकरण तथा बैल खरीदने के लिए सहायता दी जायेगी। लघु कृषक विकास योजना और सूखा संभावित क्षेत्र कार्यक्रम के अंतर्गत उन्हें खर्च की गयी राशि पर ३३ प्रतिशत अनुदान भी दिया जावेगा।

पशुऋण :- राज्य का डेरो निगम लगभग ४ हजार गांवों से दूध इकट्ठा करता है। इन सभी गांवों में अंत्योदय परिवारों को पशु दिलाये जावेंगे। इनके दूध-विक्री की व्यवस्था को राज्य दुग्ध विपणन संघ से जोड़ दिया जावेगा। अन्य स्थानों पर भी ये परिवार दुधारे पशु खरीदना चाहेंगे, उन्हें ३३ प्रतिशत अनुदान सहित ऋण दिया जायेगा। राज्य के १० जिलों

में एक विशेष पशुपालन कार्यक्रम चल रहा है। इन जिलों में अंत्योदय परिवारों को ३० भेड और १ मेंडा दिया जावेगा। इनका विपणन भी राज्य सहकारी भेड व ऊन संघ से जोड दिया जायगा। प्रायोगिक पूछताछ के दौरान अन्त्योदय पविारों ने वकरा इकाइयों को प्राथमिकता बताई थी। बडे गहरों से घिरे अंत्योदय परिवारों को मुर्गी-पालन की इकाइयों के लिये प्रोत्साहित किया जायगा। अलवर, भरतपुर में सूअर पालन का भी।

रोजगार एवं गृहउद्योग द्वारा विकास

राज्य में बडी संख्या में अन्त्योदय परिवारों को छोटी हाथकरवां इकाइयां स्थापित करवाकर, चरखे और करघे वितरित करके, बैल-चलित तेलधानियां लगवाकर, चमडा बनाने व खातीगिरी के व्यवसाय के माध्यम से तथा चूने के भट्टे लगवाकर सहायता की जायेगी। इस कार्यक्रम में खादी और ग्रामीण निगम का सक्रिय सहयोग लिया जायगा। सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्र के १५ किलोमीटर की परिधि में स्थित बृहद्-स्तरीय उद्योगों में प्राथमिकता के आधार पर यथासंभव काम दिलाया जायगा।

खनिज एवं सार्वजनिक निर्माण की भूमिका

अन्त्योदय परिवारों को खनिज क्षेत्र में उचित रोजगार दिलाने के प्रयास किये जायेंगे। खनन पट्टे दिये जाने में उनको प्राथमिकता दी जायेगी। किराये से जीविकोपार्जन के लिये बैलगाडियां एवं हाथ से चलाये जाने वाले ठेके भी उपलब्ध कराये जायेंगे। सभी सार्वजनिक निर्माण-कार्यों के अंतर्गत अन्त्योदय योजना के चयनीय परिवारों को रोजगार में प्राथमिकता दी जायेगी तथा उनके द्वारा काम चाहने पर कभी मना नहीं किया जायेगा।

राजस्थान नहर परियोजना क्षेत्र में मजदूरी

राजस्थान नहर परियोजना क्षेत्र में व्यवसाय उपलब्ध कराये जाने के काफी अवसर हैं। जो भी अन्त्योदय परिवार राजस्थान नहर क्षेत्र में रोजगार के लिए जाना चाहेंगे उन्हें हर प्रकार की सहायता दी जायेगी।

इसके दो वर्ष बाद उन्हें कृषियोग्य भूमि आवंटित की जायेगी, ताकि स्थायी रूप से बस सकें।

वृद्ध, असहाय एवं अपंगों को पेंशन .

ऐसे परिवार, जिनके पास कोई आर्थिक सम्पत्ति नहीं है तथा १५ से ५९ वर्ष के आयुसमूह में एक भी सदस्य कमाने योग्य नहीं है तो उसे ४० रु. माहवार पेंशन दी जायेगी।

ऋण एवं अनुदान

अन्त्योदय योजना के अन्तर्गत चयनित परिवारों को विभिन्न व्यवसायों के लिए ३३ प्रतिशत अनुदान, लघु कृषक विकास योजना एवं सूखा संभावित क्षेत्र परियोजना के अंतर्गत दिया जायेगा तथा शेष राशि ऋणों के रूप में उपलब्ध करायी जायेगी, जिस पर नाममात्र का ४ प्रतिशत व्याज लिया जायेगा। इस व्याज दर पर ऋण उपलब्ध कराने के लिए विभिन्न बैंक तैयार हो गये हैं।

जयपुर
जनवरी १९७८ }

निदेशक
जनसंपर्क निदेशालय राजस्थान

बिना गोबर, मैला गैसप्लांट

- ही. ना. तोडणकर -

भारत के प्रधानमंत्री श्री. मोरारजीभाई देसाई ने एक उर्वरक कारखाने के समारोह में बताया था कि "भारतीय किसानों को आये दिन कृत्रिम खाद का उपयोग कम करना चाहिए। इन कृत्रिम रासायनिक खादों के प्रयोग से भूमि की उर्वरा शक्ति का न्हास होता है और कुछ समय के बाद उपज कम होती है। हमें गोबर, मैला आदि से बने प्राकृतिक खादों के प्रयोग पर ही आगे अधिक बल देना चाहिए। गोबर और मैला गैसप्लांट बनाकर सोनखत का उत्पादन बढ़ाना चाहिए और सर्वत्र उसकी योजना को अमल में लाने के लिए प्राथमिकता देनी चाहिए। इन सेन्द्रिय खादों का यत्र-तत्र उपयोग करने से हमारी भूमि की उर्वरा शक्ति बढ़ती रहेगी और खेती की उपज में स्पष्ट वृद्धि होगी। करोड़ों व्यक्तियों का मैला आज समुद्रों, नदियों तथा नालों में बह जाता है और उन्हें दूषित कर देता है। देश की यह सम्पदा इस तरह नष्ट होते हुए हम देख रहे हैं। मानव से प्राप्त होनेवाला यह मैला उपयोगी सिद्ध होने के बजाय उपद्रवकारी बना हुआ है। गैसप्लांट के माध्यम से गोबर तथा मैले का उपयोग खाद तथा गैस बनाने के लिए कर सकते हैं। इसीसे खाद की हमारी समस्या हल हो सकती है, न कि कृत्रिम खाद कारखानों की संख्या बढ़ाने से।"

भारत कृषिप्रधान देश है। यहां की खेती प्रायः जानवरों से ही जोती जाती है। इसके लिए देश में पशुधन २२ करोड़ है, जो संसार के किसी भी देश से अधिक है। शासन ने गोबर गैस के निर्माण का व्यापक कार्यक्रम सर्वत्र लागू कर दिया है, जिससे गोबर का मही उपयोग होना शुरू हो जायगा। यह मिथेन गैस प्रदान करता है, भोजन बनाने में गैस का प्रयोग करने से लकड़ी तथा मिट्टी के तेल की बचत कर सकते हैं। गैसप्लांट से निकलनेवाले नेट्रोजनयुक्त इस खाद का कृषि के लिए बहुत अधिक उपयोग है, अधिक उत्पादन के लिए यह खाद वरदान सिद्ध हुआ

है। गैसप्लांट की संख्या बढ़ रही है। महाराष्ट्र में ही विगत वर्ष में १५०० से अधिक गैसप्लांटों का निर्माण हुआ है। भारत में ५००० से जादा गैसप्लांट बने हैं। गैसप्लांट के निर्माण के लिए वित्तीय सहायता और गैसप्लांट तज्ञों का सही मार्गदर्शन उपलब्ध किये जाने पर भारतभर में गोबर गैसप्लांट लोकप्रिय हो सकते हैं।

गोबर के बिना केवल मैले से भी बायोगैस (मिथेन गैस) प्राप्त कर सकते हैं। महाराष्ट्र में इस प्रकार के ५० से अधिक मैला गैसप्लांट आज प्रयोग में हैं। इस बायोगैस के निर्माण के लिए शीचालयों तथा खुली जगहों में मिलनेवाला मैला, साग-सब्जी, उनके छिलके और अन्य त्याज्य भाग, सड़ा दुर्गन्धीयुक्त अनाज, बासा, बचाकुचा उच्छिष्ट अन्न, अनाज की चापड़, मरे हुए चूहों व घूसों आदि जानवरों का शरीर, हम उपयोग में ला सकते हैं। सेंद्रिय पदार्थों के सड़ जाने पर उससे बायोगैस बनती है। महाराष्ट्र में ऐसी अनेक संस्थाएं हैं जो मैला गैसप्लांट लगा सकती हैं। प्रायः प्रत्येक जिले में छोटे-बड़े विद्यार्थी वसतिगृह हैं। हर जिले में आश्रम विद्यालय तथा सुधारगृह हैं। अनेक शहरों में भिखारी-गृह तथा अपंगों की सहायता के लिए संस्थाएं हैं। ऐसी संस्थाएं जहां तक मैं जानता हूं सवा हजार तक हैं। इन संस्थाओं में हजारों की संख्या में छात्र-छात्राएं तथा वयस्क रहते हैं। अनेक संस्थाओं में संडासों का अभाव है और इनमें रहने-वालों को शीचविधि के लिए खुली जगह में जाना पड़ता है। सभी संस्थाओं में छोटे-बड़े गैसप्लांटों का निर्माण किया जा सकता है। इन संडासों का मैला गैसप्लांटों में छोड़ना आवश्यक है। मैला गैसप्लांटों में पहुंचेगा तो उससे गैस बनेगा। एक व्यक्ति के मैले से प्रतिदिन डेढ़ घनफुट गैस मिल सकती है। इन गैसप्लांटों में मैले के अलावा अनावश्यक व त्याज्य वस्तुओं को डालने की व्यवस्था की जाय तो गैस अधिक प्रमाण में मिलती रहेगी और इंधन पर होनेवाला खर्च बचाया जा सकेगा, साथ-साथ बढ़िया सोनखत भी उपलब्ध होता रहेगा। इस सोनखत में नेट्रोजन का प्रमाण ३३ प्रतिशत होने के कारण वनस्पतियों के पल्लवित होने व फूलने-फलने के लिए अत्यंत लाभकारी है। दस-बारह व्यक्तियों द्वारा उपयोग में लाये जानेवाले संडास को गैसप्लांट के साथ जोड़ दिया जाय और प्लांट में

ऊपर बताये गये सड़े-गले, दुर्गन्धीयुक्त त्याज्य पदार्थों को छोड़ जाता रहे, तो इससे मिलनेवाली गैस पर प्रतिदिन डेढ़ घंटे गैस की सिगडी जलायी जा सकती है। बगीचे के लिए खाद मिलती रहेगी, वह अलग। इस खाद में किटाणु नहीं होते और इस पर मक्खियां नहीं बैठती। घर से लगी बगीचों में भी खाद डाली जाय, तो भी घर के भीतर दुर्गन्ध नहीं आयेगी।

कोकण में स्व. अप्पासाहेब पटवर्धन ने मैले के गैसप्लांट का अपने गोपुरी आश्रम में सफल प्रयोग किया है। स्व. अप्पासाहेब से प्रेरणा लेकर तथा महाराष्ट्र गांधी स्मारक निधि के मार्गदर्शन में अहमदनगर, सातारा, पुणे, रत्नागिरी, कुलाबा, ठाणे इ. जिलों में अनेक संडास, गैसप्लांट आज कार्यक्षम हैं। पूना के गांधी भवन में ९ वर्ष पूर्व बनाया गया मैला गैसप्लांट आज भी व्यवस्थित कार्यक्षम देखा जा सकता है। चार वर्ष पूर्व आनंदग्राम में २५० रुग्णों के लिए आठ संडासों पर बनाये गये गैसप्लांट का प्रयोग देख कर कुछ जर्मन तथा अमरीकी अतिथि स्तम्भित हो गये। उन्होंने आश्रम की संचालिका डॉ. इंदुताई पटवर्धन की इस सूझ-बूझ के लिए सराहना की।

एक अथवा दो संडासों पर चलनेवाले गैसप्लांट को बनाने के लिए ६ फीट व्यास की जगह पर्याप्त होती है। प्रतिदिन ४० व्यक्तियों द्वारा संडास का उपयोग करने पर इस प्लांट से मिलनेवाले गैस पर ४ इंच व्यास की गैस की सिगडी प्रतिदिन ३-४ घंटे जलायी जा सकती है। गैसप्लांट का बनाने के लिए करीब दो हजार रुपये की लागत है, जो सेप्टिक टैंक के लिए आनेवाले खर्च से कम है। गैस की लोहे की टांकी को एक-दो साल बाद आईल पेट लगा लेने पर वह कई साल तक चलेगी। गोपुरी आश्रम में लगा गैसप्लांट पिछले २४ वर्षों से सतत गैस दे रहा है।

[अधिक जानकारी के लिए श्री. तोडणकर, गांधी भवन, कोथरूड, पूना- २९ को लिखिये।]



A case for total ban on Slaughter of Cow and its Progeny

[Extracts from the letter dated, January 1, 1978
addressed to the Prime Minister, Shri Morarji Desai by
Editorial Board and Management. "GO-DARSHAN" (Cow
Philosophy) 11 A, Kalakar Street, CALCUTTA-700007]

To,

Shri Morarji Desai,

The Prime Minister of India, New Deihi

Respected Sir,

We the cow protectionists are extremely happy to find you as Prime Minister who believes in the co-existence of all living beings to have as much right to live in this world as human beings. It has been rightly said by you during the XXIV World Vegetarian Congress held in India that it is not right to inflict pain on animal for the pleasure of oneself. People of India know about your noble views and majority of Indians have elected you through their representatives as Prime Minister, and therefore it may be presumed that the majority are cow minded and in favour of complete ban on the slaughter of cattle.

Apart from this high philosophical ideas, the cattle produces 25% of the total annual wealth of the country as 50% income of Indian Union comes from Agriculture and cattle contributes 50% of this Agricultural income by supplying what is stated under (a), (b) & below : —

(a) **The Motive Power** that is essential for cultivation of our field crops including raising water from deep wells, crushing sugarcane, drawing heavily loaded carts through roadless soft fields in harvest time and negotiating through impassable Kutch Roads like a never failing friend all the year round. Besides the cattle keep all road side jungles neat and clean as they graze on such surplus uncultivated lands devouring about 20/25 kinds of

shrubs, jungles, herbs, aquatic plants and various types of weeds which enables the villagers to live in a snake free clean environment free of any cost.

(b) **A Protein Rich Complete Food Like Milk**, which is now a rich man's monopoly. The number of our Milk cows are dwindling daily due to indiscriminate slaughter.

(c) **An Easily Available Rich Organic Manure** Cowdung to increase the fertility of the land. The money value of our Cowdung has been estimated at Rs. 228/- crores in 1965 (now about 5 times). The Arab Sheikdoms are purchasing liquified cowdung from America at fabulous rates to the tune of 1.2 billion dollars to reclaim their desert areas for growing food crops. (New York Time D. 30. 12. 74 Page 26) Soil Chemists of international fame—both Indian and Foreign are now advising that we should Switch back to cowdung manure in a tropical climate like ours. Artificial manure, they say enriches the father and impoverishes the son. If cowdung is utilised to manufacture Gobar Gas it will further enhance the income of the villagers. Again, when the cattle die, the carcass can be fully utilised in various ways as rich manure, Poultry feed, Raw material for Soap making in the lard, and the skin in Leather Industry.

No record of these contributions by cattle has been properly done to enlighten the people what enormous national asset and wealth of our country is annually wasted by killing indiscriminately an all round beneficial animal like cattle to satisfy the greed of a group of inconsiderate people. The Indian Rishis fully realised the efficacy of cattle, highly evaluated the same as a noble animal most fit for domestication and to live with man as a partner of his daily routine life by declaring "GAVO VISHWASYA

MATARA" the cow is the Universal Mother and therefore **"AGHNA"** that is **"Not Slayable"**.

We therefore respectfully request you to start a statistical and scientific evaluation of the cow and its progeny in all its aspects with special reference to the shattered condition of our rural economy and to what extent slaughter of cattle is responsible for our present miserable plight.

RURAL DEVELOPMENT

Further, your programme for rural development is no doubt a move in the right direction. It is also unique as you propose to take up the neglected rural areas first. During the last thirty years no such clear cut programme was taken and in consequence as the city was allowed to grow at the cost of rural areas, the village economy was badly shaken and it dried up at the source resulting in uncontrollable misery in every walk of life in the villages.

So, the poor villagers became poorer. The village became money lenders' paradise. The production became less and less, Farmers began selling their movebles, cattle and mortgaged their lands and finally left the village in quest of work. So unemployment in rural areas became order of the day and took a menacing shape. Rural life was shattered, Unity was gone along with peace of family finally due to assasination of character of the innocent farmer which threw him in a deep mire.

The cattle is always a central factor on which the village economy is hinged. In cattle the farmer finds triple bliss - (1) Success in Agriculture, (2) More milk, (3) Plenty of cowdung manure to increase soil fertility. So pulsation in rural life is linked with protection of cow for which a total ban is absolutely necessary to enable the country to return to normalcy. If cattle wealth is mercilessly liquidated

MAHARASHTRA ANIMAL PRESERVATION ACT, 1976

Agriculture And Co-Operation Department

Mantralaya, Bombay-400 032, dated the 16 th February 1978

No. SLT. 1076 / 28233 / 3 - ADF.- The following draft of rules which the Government of Maharashtra proposes to make in exercise of the power conferred by clauses (a), (b), (c) and (d) of sub-section (2) of section 16 of the Maharashtra Animal Preservation Act, 1976 (Mah. IX of 1977) and of all other powers enabling it in that behalf is hereby published as required by sub-section (1) of the said section 16 for the information of all persons likely to be affected thereby; and notice is hereby given that said draft will be taken into consideration by the Government of Maharashtra after the 9th day of March 1978.

2. Any objections or suggestions which may be received by the secretary to the Government of Maharashtra in the Agriculture and co-operation Department, Mantralaya, Bombay from any person with respect to the said draft on or before the aforesaid date will be considered by the Government.

and village development schemes are also taken up simultaneously it will be like palying of a drama of Hamlet without the Main character of the Prince of Denmark.

Your "Abhoy Dan" promises to all before the election will remain unfulfilled if cow and its progeny do not come with in the perview of your assurance that they will not be butchered henceforth. ●



Draft Rules

1. Short title : - These rules may be called the Maharashtra Animal Preservation Rules, 1978.
2. Definitions : - (1) In these rules, unless the context otherwise requires :-
 - (a) "Act" means the Maharashtra Animal Preservation Act, 1976 ;
 - (b) "Schedule" means the schedules appended to these rules :
 - (c) "Section" means the section of the act.

(2) Words and expressions used, but not defined in these rules, shall have the same meanings as are respectively assigned to them under the Act.

3. Form of certificate under section 6 shall be granted in the form mentioned in the schedule. It shall be granted on the payment of a fee of Re. one.

4. Conditions for exemption under Act :- The conditions subject to which the Act shall not apply to the slaughter of any animal (other than cow) referred to in sub-clauses (i) and (ii) of clause (c) of section 14 shall be as follows, namely :-

- i) carcasses of the animal shall be burnt as soon as practicable after it is slaughtered.
- ii) the place or places where the animal is kept before slaughter and is slaughtered, shall be disinfected, thoroughly.

अ. भा. गोरक्षण गोसंवर्धन सम्मेलन

भारत गोसेवक समाज, हरियाना राज्य गोशाला संघ के तत्वावधान में तथा हरियाना कुरुक्षेत्र गोशाला हिसार के संरक्षण में अ. भा. गोरक्षण गोसंवर्धन सम्मेलन दि. २२-२३ अप्रैल ७८ को हिसार में आयोजित किया जा रहा है। सम्मेलन में गोशालाओं के प्रतिनिधि और गोभक्त सज्जन बड़ी संख्या में पधारेंगे। जगद्गुरु शंकराचार्य, स्वामी निरंजनदेव तीर्थ, श्री प्रभुदत्त ब्रह्मचारी आदि धर्माचार्य तथा हरियाना के मुख्य मंत्री चौ. देवीलालजी तथा केन्द्रीय कृषि मंत्री सरदार सुरजीतसिंह वरनाला से भी पधारने की प्रार्थना की गई है।

सम्मेलन में गोरक्षण गोसंवर्धन संबंधी अनेक ज्वलंत समस्याओं पर विचारविमर्श होगा और इस संबंध में सरकारी तथा गैरसरकारी विशेषज्ञों के सहयोग से जनता तथा शासन के लिए कोई व्यावहारिक कार्यक्रम तैयार किया जायेगा। हरियाना में प्रथम बार अखिल भारतीय गोरक्षा सम्मेलन हो रहा है। हिसार राष्ट्र के महान नेता ला. लाजपतराय पं. ठाकुरदास भार्गव, ला. हरदेवसहाय और पं. नेकीराम शर्मा आदि गोभक्त नेताओं की कर्मभूमि रह चुका है। आशा है, सभी गोभक्त सज्जन इस आयोजन को सफल बनाने में योग देंगे।

विनीत

विश्वंभरप्रसाद शर्मा

महामंत्री, भारत गोसेवक समाज,

दिल्ली - ६

गोसेवा में सक्रिय सहयोग दीजिये

रोजाना ५ पैसे मानकर सालाना रु. १८ / अठारह देकर 'गोग्रास' योजना के सदस्य बनिये। इसमें से रु. ९ / का प्रत्यक्ष चारादाना, गोसदन की गायों को मिलेगा। रु. ६ / का 'गोग्रास' मासिक हर माह आपको मिलेगा एवं रु. ३ / गोसेवा की व्यवस्था में लगेंगे।

हरेक गोप्रेमी सज्जन सदस्य बनकर गोसेवा कार्य में सक्रिय सहयोग दें एवं गोसेवा कार्य से परिचित रहें यही प्रार्थना।

गोपुरी-बर्धा
(महाराष्ट्र)

मंत्री
अ. भा. कृषि-गोसेवा संघ

बुक-पोस्ट

व्यवस्थापक,

विश्वविद्यालय प्रकाशन,

विशालक्ष्मी भवन चौक,

वाराणसी (U. P.)